

पार्श्व एकादशी कथा in Hindi

कथा आरंभ:

कुरुक्षेत्र युद्ध के दौरान, श्रीकृष्ण ने राजा युधिष्ठिर को धर्म और नीति की शिक्षा देते हुए, भगवान विष्णु के वामन अवतार की कथा सुनाई।

बलि राजा की भक्ति:

त्रेतायुग में, बलि नामक एक दैत्य राजा था। वह भगवान विष्णु का परम भक्त था और विविध प्रकार के वेद मंत्रों से उनका पूजन करता था। बलि ने अनेक यज्ञ संपन्न किए और ब्राह्मणों को दान दिया।

इंद्र से युद्ध और देवताओं की पराजय:

इंद्र, बलि की शक्ति और पराक्रम से ईर्ष्या करते थे। उनके बीच युद्ध हुआ, जिसमें बलि ने इंद्र और देवताओं को पराजित कर दिया।

देवताओं की शरणागति और वामन अवतार:

पराजित देवता भगवान विष्णु की शरण में गए। भगवान ने उनकी रक्षा का वचन दिया और वामन रूप धारण कर बलि के पास गए।

तीन पग भूमि की याचना:

वामन रूप में, भगवान विष्णु ने बलि से तीन पग भूमि दान में मांगी। बलि, भगवान की भक्ति में लीन, बिना किसी शर्त के दान देने को तैयार हो गए।

त्रिविक्रम रूप और बलि का बलिदान:

वामन रूप धारण किए हुए भगवान विष्णु ने अपना विशाल रूप धारण किया। उन्होंने अपने पहले पग से पृथ्वी और दूसरे पग से स्वर्ग लोक नाप लिया। तीसरे पग के लिए स्थान न होने पर, बलि ने अपना मस्तक आगे कर दिया। भगवान ने अपना पैर बलि के मस्तक पर रख दिया, जिससे बलि पाताल लोक चले गए।

बलि की भक्ति का सम्मान:

बलि की अटूट भक्ति और त्याग से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उन्हें सदैव अपने पास रहने का वरदान दिया।

कथा का महत्व:

भगवान विष्णु के वामन अवतार की कथा, सत्य, न्याय, दान, और भक्ति का महत्व दर्शाती है। यह सिखाती है कि भगवान सदैव अपने भक्तों की रक्षा करते हैं और दानवीरता तथा त्याग का सदैव सम्मान करते हैं।

कथा का समापन:

भगवान विष्णु की वामन अवतार कथा, युधिष्ठिर के मन में धर्म और कर्तव्य की भावना को दृढ़ करती है।

अतिरिक्त जानकारी:

- भगवान विष्णु का वामन अवतार, भाद्रपद शुक्ल एकादशी को मनाया जाता है।
- इस दिन भगवान विष्णु की पूजा करने से विशेष फल प्राप्त होते हैं।

Parsva Ekadashi Vrat Katha in English

Beginning of the Story

During the Kurukshetra war, Lord Krishna taught King Yudhishtira the principles of dharma (righteousness) and niti (moral policy) by narrating the story of Lord Vishnu's Vamana avatar.

The Devotion of King Bali

In the Treta Yuga, there was a demon king named Bali. He was a great devotee of Lord Vishnu and worshiped him with various Vedic mantras. Bali performed many sacrifices (yajnas) and generously donated to Brahmins.

The Battle with Indra and the Defeat of the Gods

Indra, the king of the gods, was envious of Bali's power and valor. A battle ensued between them, in which Bali defeated Indra and the other gods.

The Gods' Surrender and the Vamana Avatar

The defeated gods then sought refuge with Lord Vishnu. The Lord promised to protect them and assumed the form of Vamana, a dwarf Brahmin, to approach Bali.

The Request for Three Paces of Land

In his Vamana form, Lord Vishnu asked Bali to grant him three paces of land as alms. Immersed in devotion, Bali agreed to the request without any conditions.

The Trivikrama Form and Bali's Sacrifice

After receiving Bali's consent, Lord Vishnu expanded into his Trivikrama form. With his first step, he measured the entire earth, and with his second step, he measured the heavens. When there was no place left for the third step, Bali offered his own head. Lord Vishnu placed his foot on Bali's head, sending him to the netherworld (Patal Lok).

Honoring Bali's Devotion

Pleased with Bali's unwavering devotion and sacrifice, Lord Vishnu blessed him with the boon of staying forever in his divine presence.

The Significance of the Story

The story of Lord Vishnu's Vamana avatar emphasizes the values of truth, justice, charity, and devotion. It teaches that the Lord always protects his devotees and honors generosity and sacrifice.

Conclusion of the Story

The story of Lord Vishnu's Vamana avatar reinforces the spirit of dharma and duty in the mind of Yudhishthira.

Additional Information

- **Lord Vishnu's Vamana avatar is celebrated on Bhadrapada Shukla Ekadashi.**
- **Worshiping Lord Vishnu on this day brings special blessings.**